

मालती जोशी की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

अनीता कुमारी

शोधार्थी

हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना-समाज मनुष्यों का एक ऐसा समूह है जिसमें सभी एक-दूसरे के साथ आपस में जुड़े रहते हैं। इसमें सभी तरह के मानवीय क्रिया-कलाप शामिल होते हैं। समाज में तरह-तरह की घटनाएँ घटते रहती हैं। समाज से संबंधित घटनाओं का यथार्थ चित्रण ही सामाजिक यथार्थ कहलाता है। युग के अनुरूप सामाजिक यथार्थ की अवधारणा बदलती रहती है। हमारे समाज में घटित होनेवाली घटनाएँ साहित्य के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जाता है। चूँकि साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। अतः समाज के अंदर होनेवाले उतार-चढ़ाव का यथार्थ रूप रचनाकार अपनी रचनाओं के द्वारा समाज के सामने लाने का प्रयास करता है। नारी और पुरुष दोनों ही समाज के परस्पर पूरक अंग हैं, क्योंकि समाज निर्माण में नारी तथा पुरुष दोनों का ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुरुष अपने घर तथा समाज का सिर्फ अकेले निर्माण नहीं कर सकता, उसमें नारी का भी प्रमुख स्थान है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वैदिक काल में नारियों का स्थान पुरुष के समान ही था, किन्तु कालान्तर में नारी की स्थिति दयनीय होती चली गयी।

मालती जोशी जी, हिन्दी कहानीकारों में एक प्रमुख कहानीकार हैं, जिन्होंने समाज की वास्तविकता को अधिक महत्त्व दिया है। समाज में रहते हुए उन्हें जो अनुभूति मिली उसे ही उन्होंने अपनी कहानियों का आधार बनाया। समाज में व्याप्त कुशीतियों के कारण अपमान का दंश झेलती हुई स्त्रियों की यथार्थ स्थिति का चित्रण मालती जोशी जी ने किया है। उन्होंने नारी के विविध पहलुओं को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी उत्पीड़न के प्रति विद्रोह के भाव को तो व्यक्त किया ही है साथ ही साथ बदलते मानवीय जीवन मूल्यों के कारण नारी समस्याओं को भी चित्रित किया है। उन्होंने नारी के आधुनिक स्वरूप को उभारकर समाज में नारी-पुरुष की समानता पर भरपूर बल दिया है। मालती जोशी जी ने आधुनिक नारी की वास्तविक स्थिति से परिचय कराया है तथा नारी हृदय की आशा-आकांक्षाओं, मानसिक प्रथियों एवं समस्याओं का मार्मिक चित्र अपनी कहानियों में खींचा है। उन्होंने दहेज-प्रथा, अनमेल-विवाह, विधवा-विवाह, आदि जैसी सामाजिक समस्याओं को बड़े ही गहनता के साथ चित्रित किया है।

मालती जोशी जी ने समाज में फैली कुरीतियों में से एक दहेज-प्रथा जैसी कुरीति को उद्भूत किया है। जिससे समाज में चली आ रही इस प्रथा के कारण नारी को सबसे अधिक संघर्ष करना पड़ता है। "कन्यादान" कहानी की नायिका सुम्मी के घर की आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण परिवार वालों को उसके विवाह की चिन्ता लगी रहती है। दहेज के लिए रकम जुटाना मध्यवर्गीय परिवारवालों के लिए बहुत कठिन होता है। यही कारण है कि सुम्मी की माँ परेशान सी लगती है। अपने छोटे भाई से सुम्मी के दूद कहते हैं— "तुम यदि सोचते हो कि कोई नारियल-सुपारी के साथ तुम्हारी बेटी ब्याह कर ले जाएगा, तो भइये, हिन्दुस्तान में अभी पचास साल तक वह दिन नहीं आएगा।" कथानायिका सुम्मी इस प्रथा के कारण हीन भावना से ग्रस्त दिखती है। "बकुल फिर आना" कहानी में दहेज के कारण बकुल को ससुरालवालों द्वारा जलाकर मार दिया जाता है परन्तु सबकुछ जानते हुए भी आर्थिक तंगी के कारण चार बेटियों वाला पिता अपनी बड़ी बेटी का विवाह उसी

घर में कर देता है, क्योंकि उसके पास दहेज देने के लिए पैसे नहीं होते। समाज में फैली कुप्रथा की वजह से मोरी "रंग दी चुनरिया" की नायिका जया को घर से बाहर आने-जाने में प्रतिबंध लगा दिया जाता है तथा घर में उसे कैद करके रखा जाता है। अपनी इस पीड़ा को जया अपनी सखी से कहती है— सच कह रही हूँ दीदी! मुझे कमरे में कैद करके रखा गया है, कॉलेज नहीं जाने देते, टी०वी० नहीं देखने देते, पानी भी मांगकर पीना पड़ता है। मुझे कोई घड़ा नहीं छूने देता।² इस तरह उसे अपने ही लोगों द्वारा बार-बार अपमानित किया जाता है। उसका कुसर सिर्फ इतना रहता है कि उसके पति जिसे न उसने देखा और न कभी उसके घर गई, उसकी मृत्यु हो जाती है और उसके ऊपर विधवा होने का ठप्पा लग जाता है। भारतीय समाज आज भी पुरानी प्रथाओं तथा मान्यताओं से ग्रस्त दिखता है। भारतीय समाज में विधवा का शोषण होता है एवं उसे अनेक विषमताओं से गुजरना पड़ता है। विधवा नारी अपने ही लोगों द्वारा आश्रय पाने के लिए विवश हो जाती है तथा समाज द्वारा अनेक प्रतिबंध उस पर लगा दिए जाते हैं। उनकी उसकी सभी प्रतिक्रियाओं पर बार-बार टोककर और ताने देकर उनका जीवन दुखमय बना दिया जाता है। समाज की यह विडंबना है कि विधवा स्त्री को हमेशा उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता रहा है, उसे हर शुभ कार्यों से दूर रखा जाता है खास कर जब कोई शादी ब्याह का मौका हो। समाज में फैली इस कुप्रथा के कारण कई महिलाएँ मानसिक रोग का शिकार हो जाती हैं। ऐसी स्त्रियाँ अपने सभी कार्यों के लिए दूसरे पर आश्रित हो जाती हैं। विधवा स्त्री को दूसरों के घर में विवाह के रस्मों में शामिल तो नहीं ही किया जाता लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हो जाती, यहाँ तक कि उसे अपने संतान के विवाह के शुभ अवसर पर भी रस्मों में भाग लेने पर प्रतिबंध होता है। जो माँ अपने संतान की रक्षा के लिए हमेशा ढाल बनकर खड़ी रहती है उसी माँ के हाथों अमंगल की कामना से उसे अपने बेटे से दूर रखा जाता है। "कवच" कहानी में इसी सामाजिक कुप्रथा से संबंधित है। इसमें विनय की माँ जो खुद नौकरी करके अपने बेटे को पढ़ा-लिखा कर इस योग्य बनाती है कि वह भी नौकरी करने लगता है। उसी बेटे के विवाह के अवसर पर हरेक रस्म में वह अलग-थलग रहती है। अकेले में होकर वह अपने आँसू बहाती है, ताकि बेटे को उसकी पीड़ा का आभास तक न हो। परन्तु विनय अपनी माँ से बेइंतहा प्यार करता है और वह सारे नियमों को तोड़कर बारात जाते समय अपनी माँ से तिलक लगवाता है तथा अपनी माँ का आशीर्वाद लेता है। ऐसा माना जाता है कि हमारा समाज आज बहुत आगे बढ़ गया है। परन्तु सिर्फ कहने के लिए हम आगे बढ़े हैं, हमारी सोच आज भी वहीं की वहीं है। हमारे भारतीय समाज में जाति प्रथा की रीढ़ सजातीय विवाह को माना जाता है। हालाँकि अंतर्जातीय विवाह भी होने लगा है, फिर भी सजातीय विवाह को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। अन्तर्जातीय विवाह को आसानी से मान्यता नहीं मिल पाती उसके लिए बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। इसी प्रसंग से संबंधित कहानी "प्रत्यावर्तन" है, जिसमें मालती जोशी जी ने अन्तर्जातीय विवाह के कारण उत्पन्न समस्या पर प्रकाश डाला है। अनुराधा और अशोक पेशे से डॉक्टर रहते हैं और दोनों का अन्तर्जातीय विवाह होता है। परन्तु अशोक के घरवाले इस विवाह के खिलाफ रहते हैं। जब अशोक अनुराधा को लेकर अपने घर जाता

अशोक की माँ उसे अपमानित करने का एक भी मौका नहीं छोड़ती और उसकी तरफ इशारा करके बोलती है— "इस चुड़ैल के साथ यहाँ आने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?"³ इस तरह अनुराधा अपनी सास के द्वारा अपमानित होकर वापस लौट जाती है लेकिन कुछ दिनों के बाद अशोक के पिता को कैंसर हो जाता है और उसे हॉस्पिटल में बुलाया जाता है। अशोक जिद्द करके अनुराधा को भी साथ ले जाता है, जहाँ उसकी सास अशोक को कमरे में ले जाकर दरवाजा को सटा देती है। अनुराधा बाहर ही प्रतीक्षा करते रह जाती है। लेकिन अशोक भी अनुराधा को न तो लिवा ले जाता है और न घर जाने के लिए कहने आता है। अंत में अनुराधा घर आकर अपना सामान समेटती है और अपने पिता के घर आ जाती है। अशोक भी उसे मनाने की कोई किसी प्रकार से कोई पहल नहीं करता। इस प्रकार अनुराधा और अशोक एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। समाज की सबसे ज्वलंत समस्या तलाक की समस्या है। दर्व्यवहार, छलकपट, धोखा, अहंकार, विवाहेतर संबंध आदि के कारणों से तलाक जैसी समस्या उत्पन्न होती है। "पिता" कहानी में नमिता के पिता का अपनी पत्नी के प्रति दर्व्यवहार का कारण उनकी बेटे की चाह थी। जब उनकी दूसरी संतान भी बेटे ही होती है तो वे अपनी पत्नी को अनेकों तरह से प्रताड़ित करते हैं। जिसके कारण अपनी दोनों बेटियों को लेकर वह अपनी माँ के घर आ जाती है। इस तरह पति के अत्याचार से पीड़ित होने के कारण पति-पत्नी दोनों के बीच वैवाहिक संबंध का पतन हो जाता है। दोनों अलग हो जाते हैं।

उनकी एक कहानी अक्षम्य है जिसमें पति-पत्नी के बीच संदेह के कारण तलाक जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। श्याम एवं उसकी माँ बिन्दु के कम पढ़े-लिखे होने के कारण उसे हमेशा अपमानित करते हैं। श्याम भी उससे तलाक लेने के लिए कोई न कोई बहाना ढूँढता रहता है। जब श्याम की माँ, बिन्दु को 'रज्जू' हलवाहे के साथ गलत लाँक्षण लगाती है तो श्याम भी उसे संदेह की नेजर से देखने लगता है। इस संदेह के कारण वह बिन्दु से तलाक ले लेता है।

आज बेटियाँ भी बेटों से कम नहीं हैं। हर एक क्षेत्र में आज वह अपने माता-पिता का नाम रौशन कर रही हैं। फिर भी सामाजिक परंपरा को निभाने का जिम्मा अधिकतर लड़कों के हिस्से में ही आता है। इसी कुंठित मानसिकता से ग्रस्त लोग बेटे पैदा हो जाने के कारण अवसादग्रस्त हो जाते हैं। बेटियों को बचपन से ही कभी पिता के अधीन तो कभी बड़े होने पर भाई के अधीन और विवाह हो जाने पर पति के अधीन रहना पड़ता है। वे अपना स्वतंत्र जीवन जीने के लिए तड़प कर रह जाती हैं। इसी विषय से संबंधित कहानी है "पिया पीर न जानी" जिसमें यह दृश्य देखने को मिलता है कि बार-बार बेटियों को जन्म देने कारण एक स्त्री को किस प्रकार पीड़ित होना पड़ता है। इस कहानी की रमा जब-जब लड़की को जन्म देती है तब-तब सास-बहू के सम्बन्ध में कड़वाहट उत्पन्न होती है। रमा कहती है— "कन्या के होने पर अम्मा जी का कहना था कि दुःख ने उन्हें पत्थर बना दिया था। पर सच तो यह है कि पत्थर तो वह शुरू से ही थी, लेकिन उस पत्थर दिल इंसान के लिए अपनी कन्याओं का गर्भ में ही गला घोट दिया था। अतएव सास के खौफ से रमा अपनी दोनों कन्याओं को जन्म से पहले ही मार डालती है। अभिप्राय यह कि आधुनिक युग में शिक्षित पत्नी को भी इस यातना का शिकार होना पड़ता है। समाज में बेटे को महत्व दिया जाता है जिसकी वजह से नारी को इस पीड़ा को भोगना पड़ता है।

निष्कर्षतः भारतीय समाज में जिस प्रकार कुरीतियों के कारण नारियों का शोषण किया जाता रहा है उसका दुष्परिणाम यह होता है कि या तो स्त्री खुद की जीवनलीला समाप्त कर लेना चाहती है या फिर घुटन भरी जिंदगी जीने को मजबूर होती है।

आज के दौर में भी यह एक गंभीर समस्या बनी हुई है। इसी विषय पर मालती जोशी जी ने अपनी कहानियों में जहाँ विचारों से जकड़े व्यक्तियों का चित्रण किया है वहीं के समाज में स्त्रियों की विभिन्न स्थितियों को भी दर्शाया है। उन्होंने समाज में व्याप्त पुरानी परंपराएँ, मान्यताएँ तथा रूढ़ियों को समाप्त कर नयी परंपराओं और मान्यताओं का निर्माण करना चाहती हैं। जिससे कि नारी को भी पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हो सके और उसका जीवन सुखमय बन सके। इनकी कहानी पाठकों को समाज में व्याप्त कुरीतियों, पुरानी मान्यताओं और रूढ़ियों को तोड़कर एक नये समाज की स्थापना की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है।

संदर्भ सूची-

1. जोशी, मालती - कन्यादान, 'मन न भये दस बीस' (कहानी-संग्रह) साक्षी प्रकाशन, दिल्ली - 2010 पृ० 50
2. जोशी, मालती - मोरी रंग दी चुनरिया (कहानी-संग्रह) किताबघर प्रकाशन, दिल्ली - 1992 पृ० 34
3. जोशी, मालती - प्रत्यावर्तन, ना जमीं अपनी ना फलक अपना (कहानी-संग्रह) साक्षी प्रकाशन दिल्ली - 2014 पृ० 81
4. जोशी, मालती - पिया पीर न जानी (कहानी-संग्रह) किताबघर प्रकाशन, दिल्ली - 1999 पृ० 22-23